डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज
– वाराणसी –

स्नातक पाठ्यक्रम
बी.ए. भाग – 3 (पंचम सत्र)

-: हिन्दी विभाग :-
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पंचम सत्र

नवम् प्रश्न पत्र

आदिकाव्य एवं निर्गुण भक्तिकाव्य BGHD – 309 C

कोड : BAH-311

क्रेडिट : 03

आदिकाल का अध्ययन हिंदी साहित्य के अध्ययन को पूर्णता प्रदान करता है। यहाँ हम आदिकालीन काव्य एवं भाषा की तीन धाराओं के प्रतिनिधियों चंदबरदायी, विद्यापति और अमीर खुसरो के माध्यम से इस काल की कविता को समझेंगे। इस क्रम में भक्ति काव्य की निर्गुण धारा के प्रतिनिधि कवियों कबीर और जायसी का अध्ययन हिंदी भाषा और साहित्य के विकास को समझने में विद्यार्थियों का सहयोग करेगा।

1. **चंद्रवरदाई** : कयमास वध। (प्रारंभिक 10 छंद)

2. **विद्यापति** : कनक भूधर शिखर वासिनी, नन्दक नन्दन कदम्बोरि तरूतरे, देख देख राधा रूप अपारा, को हमें साँझक एक सरि तारा, नव वृन्दावन नव नव तारा गन। (05)

3. **अमीर खुसरो** : (खुसरो की हिन्दी कविता–सं. ब्रजरत्नदास): मुकरी–156,160, 162, 168, 175, 184, 185, 188, 197,204.

   दोहा–291, 292, 295.
   पद–286, 293.

4. **कबीर** : (हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद सं 2, 3, 8, 11, 12, 36, 41, 42, 57, 67, 69, 87, 89, 97, 108, 112, 220, 221, 122, 224, 231, 151, 154, 165, 234, 235, 243, 245, 249, 250. (30)

5. **जायसी** : पद्मावत (संपादक रामचंद्र शुक्ल) नागमती विरह खंड (19)

इकाई 1 : चंद्रवरदाई

(I) चंद्रवरदायी का 'पृथ्वीराज रासो'

(II) 'पृथ्वीराज रासो' में समाज

(III) काव्य भाषा एवं शिल्प

(IV) कयमास वध की विशिष्टता

इकाई 2 : विद्यापति

(I) विद्यापति का काव्य संसार

(II) देश एवं देश भाषा की कविता

(III) पदावली की विशिष्टता

(IV) काव्य कला

इकाई 3 : अमीर खुसरो

(I) अमीर खुसरो का काव्य संसार

(II) अमीर खुसरो की कविता में हिन्दी भाषा का स्वरूप

(III) लोक कविता से जुड़ाव

(IV) काव्य कला

इकाई 4 : कबीर

(I) कबीर की सामाजिक विचारधारा

(II) प्रेम – दर्शन

(III) दर्शन एवं रहस्य–भावना

(IV) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 5 : जायसी

(I) सूफीवाद और कवि जायसी

(II) जायसी : प्रेमाख्यान का स्वरूप

(II) जायसी : लोक संस्कृति

(IV) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

अनुशंसित ग्रंथ :

1. पृथ्वीराज रासो की भाषा – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
2. हिंदी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. विद्यापति – शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद
5. जायसी – विजयदेव नारायण साही, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
6. कबीर की खोज – राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. पूरा कबीर –सं. बलदेव वंशी, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली

दशम प्रश्न पत्र

सगुण भक्ति काव्य

BCHD – 310 C

कोड : BAH-312
क्रेडिट : 03

भक्ति काव्य ने हिन्दी भाषी समाज की संस्कृति की रचना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। निर्गुण भक्ति के प्रतिनिधि कवियों के अध्ययन के अनंतर सगुण भक्ति धारा के प्रतिनिधि कवियों सूरदास, मीरा, तुलसीदास और रसखान तथा इनके समकालीन कवि रहीम के माध्यम से हम इस पाठ्यक्रम में महान साहित्यिक विरासत का संवेदनात्मक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

1. **सूरदास** : भ्रमरगीत सार– संपादक, रामचंद्र शुक्ल (6, 9, 10, 108, 109, 114, 116,125, 130, 134, 134, 138, 141, 143, 146, 151, 155, 157, 172, 197. (20)

2. **मीरा** : जोगी मत जा मत जा मत जा, छोड़ मत जाज्यो जी महाराज, जोगिया रे प्रीत कियॉं दुख होई, हे री म्हा तो दरद दिवाणॉं, पपइया रे पिव की वाणी न बोल, दरस बिण दूखॉं म्हारा णैण, म्हारो जणम जणम रो साथी, बरसॉं री बदरिया सावन री, चॉलॉ वाही देस प्रीतम पावॉं, माई म्हां गोविन्दगुण गास्यॉं। (10)

3. तुलसीदास :

कवितावली (गीता प्रेस संस्करण)–अयोध्या कांड (सं.1, 2, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 18, 20, 21, 22.)

रामचरित मानस (गीता प्रेस संस्करण) – अयोध्याकांड (दोहा सं0 203 से 215 तक

4. **रसखान** : (रसखान रचनावली –सं. विद्यानिवास मिश्र) 1, 2, 3, 18, 25, 27, 31, 32, 35, 55, 67, 82, 122, 125, 135.(15)

5. **रहीम** : दोहे – अनुचित बचन न मानिये, कहि रहीम संपति, जल जात बरि, चित्रकूट में रमि रहे, ये रहीम दर दर फिरै, जो गरीब परहित करै, जैसे तुम हमको करी, जैसी परै सो सहि रहै, अब लगी जीनो भलो, मनसिज माली

की उपज, यों रहीम सुख होत है, रहिमन कठिन चितानते, रहिमन सराहिये, ओई काम

05 बरवे– निस दिन सास, कासन कहै संदेसवा, बहुत दिना पर पियवा, लैके सुघर सुरूपिया, सरस नहीं अपरधवा

इकाई 1 : सूरदास

(I) सूरदास की कविता के आधार स्रोत

(II) सूरदास की कविता में समाज

(III) भ्रमरगीत :दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

(IV) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 2 : मीरा (I) मीरा की कविता में कृष्ण– भक्ति

(II) गीति तत्व एवं भाषा

(III) प्रेम का स्वरूप

(IV) स्त्री–स्वातंत्र्य का प्रश्न और मीरा

इकाई 3 : तुलसीदास

(I) तुलसी की कविता में तत्कालीन समाज

(II) लोकमंगल

(III) दर्शन एवं भक्ति

(IV) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 4 : रसखान (I) कृष्ण भक्ति परम्परा में रसखान का महत्व

(II) रखखान की कविता में ब्रज प्रदेश

(III) जीवन–चित्र एवं भावना

(IV) काव्य भाषा एवं काव्य रूप

इकाई 5 : रहीम (I) रहीम का काव्य संसार

(II) नायक–नायिका भेद

(III) नीति कथन की कविता

(IV) काव्य भाषा

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2. महाकवि सूरदास :– नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

3. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई

4. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

5 गोसाईं तुलसीदास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी

6. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेष कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली

7. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

8. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली

9. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

10. मीरा एक पुनर्मूल्यांकन –सं. पल्लव, आधार प्रकाशन, पंचकूला

11. तुलसीः एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला

12. रसखान – श्यामसुन्दर व्यास, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली

एकादश प्रश्न पत्र

रीतिकाव्य

BCHD – 311 C

कोड : BAH-313
क्रेडिट : 03

रीतिकाव्य की विविध धाराओं के प्रतिनिधि कवियों केशव, मतिराम, पद्माकर, बिहारी एवं घनान्द का अध्ययन इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

निर्धारित अंश :

केशव : रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी (वनमार्ग में राम प्रसंग – 38 से 47.)

बिहारी : बिहारी (सं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) , (दोहा स. – 4, 8, 13, 19, 30, 32, 50, 52, 54, 64, 67, 71, 77, 116, 146, 163 ,214, 367, 369, 394, 424, 439, 446, 461, 468 (25)

मतिराम : (रीति काव्यधारा –सं. रामचंद्र तिवारी,रामफेर तिवारी)–1, 4, 6, 8, 9, 14, 15, 16, 20, 27. (10)

घनानन्द : घनानंद कवित्त : सं0 विश्वनाथप्रसाद मिश्र पद सं. 7, 24, 27, 29, 41, 42, 58, 63, 83, 88. (10)

पद्माकर : रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी (2, 9, 10, 12, 13, 14, 15, 24, 25, 26.) (10)

इकाई 1 : रीति काव्य (I) रीति की अवधारणा

(II) रीतिकाव्य की अंतर्धारायें

(III) रीतिकाव्य का सामाजिक आधार

(IV) कविता की कला

इकाई 2 : केशव (I) केशव : काव्य संसार

(II) केशव : सहृदयता का प्रश्न

(III) केशव का आचार्यत्व

(IV) केशव : वर्णन प्रणाली एवं संवाद योजना

इकाई 3 बिहारी : (I) बिहारी सतसई : वर्ण्य विषय

(II) श्रृंगार की विशिष्टता

(III) सामंती समाज की अभिरूचि एवं जीवन

(IV) 'गागर में सागर' की कला

इकाई 4 : मतिराम/पद्माकर (I) मतिराम : संवेदना, भाषा एवं शिल्प

(II) मतिराम : सरसता एवं स्वाभाविकता

(III) पद्यमाकर : संवेदना, भाषा एवं शिल्प

(IV) पद्यमाकर : श्रृंगारिकता एवं भावुकता

इकाई 5 : घनानंद (I) रीतिमुक्ति का काव्य संसार

(II) अंतर्जगत का प्रेम

(III) प्रेम की पीर

(IV) रचना विधान

अनुशंसित ग्रंथ :

1. रीतिकाव्य की भूमिका – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

2. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद

3. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

4. रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह, ना0प्र0सभा, काशी।

5. केशव का आचार्यत्व – डॉ0 विजयपाल सिंह, राजपाल एंड संस, दिल्ली।

6. महाकवि मतिराम – डा0 त्रिभुवन सिंह, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।

7. रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

8. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग–2, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।

द्वादश प्रश्न पत्र

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

BCHD – ~~303~~ 312 C

कोड : BAH-314

क्रेडिट : 03

भाषा विज्ञान भाषाओं के अध्ययन का शास्त्र है। इस पाठ्यक्रम में हम भाषा विज्ञान की प्रारंभिक अवधारणाओं का परिचय प्राप्त करने के साथ ही हिंदी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इकाई 1 : (I) भाषा : परिभाषा, स्वरूप, अंग, विशेषताएँ

(II) भाषा और बोली

(III) भाषा विज्ञान : परिभाषा, भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ

(IV) भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से सम्बन्ध

(V) भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ

इकाई 2 : (I) हिन्दी की ध्वनियाँ – खण्ड्य और खण्डेतर ध्वनियाँ

(II) खण्ड्य ध्वनियॉं–स्वर और व्यंजन

(III) खण्ड्य ध्वनियों का वर्गीकरण

(IV) हिन्दी में आगत, विदेशी ध्वनियाँ

इकाई 3 : (I) हिन्दी शब्द–सम्पदा

(II) हिन्दी की शब्द कोटियाँ – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया –विशेषण का सामान्य परिचय।

(III) हिन्दी की व्याकरणिक कोटियाँ – लिंग, वचन, काल, पक्ष, वृत्ति का प्रयोगगत परिचय।

(IV) कारक और परसर्ग में अन्तर, हिन्दी कारकों का प्रयोगगत परिचय।

(V) हिन्दी क्रिया : सामान्य परिचय।

इकाई 4 : (I) राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी का सामान्य परिचय।
(II) भाषा और लिपि
(III) देवनागरी लिपि : गुण–दोष
(IV) देवनागरी लिपि : मानकीकरण

अनुशंसित ग्रंथ :

1 भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

2 भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।

3 सामान्य भाषा विज्ञान – बाबूराम सक्सेना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

4 हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी, भारती भंडार, इलाहाबाद।

5 भाषा और समाज – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

विशेष अध्ययन : 1 सगुण भक्ति काव्य 13(ब) HCHD 313(b) M

कोड : BAH-315 (2)
क्रेडिट : 03

पाठ्यपुस्तक :
सगुण भक्ति काव्य संग्रह : सं० रामनरेश वर्मा – डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी

पाठ्य अंश :

सूर	:	भ्रमर के पद संपूर्ण।
तुलसी	:	कवितावली, आरंभ से 25 छंद।
मीराबाई	:	पदावली – आरंभ से 15 पद।
नन्ददास	:	शरद रजनी वर्णन।
[illegible]	:	[illegible]

इकाई 1 : **सगुण भक्ति काव्य** (I) सगुण भक्ति का दार्शनिक आधार
(II) वैष्णव मत
(III) सगुण काव्य में समाज
(IV) 'लीला' एवं जीवन का उत्सव

इकाई 2 : **सूरदास** (I) सूर की कविता में कृष्ण का स्वरूप
(II) सूर की कविता में गोपालक समाज
(III) भक्ति भावना
(IV) काव्य कला

इकाई 3 : **तुलसीदास** (I) तुलसी की कविता में राम
(II) युगबोध
(III) भक्ति भावना

(IV) काव्य कला

इकाई 4 मीराबाई (I) मीरा की कविता में कृष्ण

(II) युगबोध, विद्रोह एवं स्वातंत्र्य चेतना

(III) प्रेम एवं भक्ति

(IV) काव्य कला

इकाई 5 : नन्ददास/हित हरिवंश (I) नन्ददास का काव्य संसार

(II) नन्ददास : भक्ति भावना

~~(III) हित हरिवंश का काव्य संसार~~

~~(IV) हित हरिवंश : भक्ति भावना~~

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

2. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

3. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई

4. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

5 तुलसीः एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला

6. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेष कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली

7. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

8. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली

9. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

10. मीरा एक पुनर्मूल्यांकन –सं. पल्लव, आधार प्रकाशन, पंचकूला

विशेष अध्ययन-2 ✓ हिन्दी नाटक एवं रंगमंच 14 (b)

BCHD 314(b) M

क्रेडिट : 03

कोड : BAH-316 (2)

पाठ्यांश :

यहूदी की लड़की (आगा हश्र कश्मीरी), कोणार्क (जगदीश चन्द्र माथुर), हानूश (भीष्म साहनी), चरनदास चोर (हबीब तनवीर), आठवाँ सर्ग (सुरेन्द्र वर्मा), बहू (त्रिपुरारी शर्मा)

इकाई 1 : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच : (I) हिन्दी नाटक का विकास

(II) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : अंतर्धारायें

(III) हिन्दी रंगमंच : परिचय

(IV) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच : अंतर्धारायें

इकाई 2 :

(I) यहूदी की लड़की : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II)यहूदी की लड़की : रंगमंचीयता

(I) कोणार्क : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II) कोणार्क : रंगमंचीयता

इकाई 3 :

(I) हानूश : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II) हानूश : रंगमंचीयता

(I) चरनदास चोर : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II) चरनदास चोर : रंगमंचीयता

इकाई 4 :

(I) आठवाँ सर्ग : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II आठवाँ सर्ग : रंगमंचीयता

(I) बहू : कथावस्तु, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख चरित्र

(II) बहू : रंगमंचीयता

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिंदी नाटक : उद्‌भव और विकास – दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली

2. पहला रंग – देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3. रंग परम्परा – नेमिचन्द्र जैन

4. समकालीन हिन्दी नाटक की संघर्ष चेतना – गिरीश रस्तोगी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ

बी.ए. 3

पंचम सत्र

पंचम प्रश्न पत्र (अनिवार्य प्रश्नपत्र हिन्दी)

क्रेडिट : 03
कोड : BAHL-311

दीर्घ उत्तरीय (15 X 2=30)
लघु उत्तरीय (8 X 4=32)
वस्तुनिष्ठ (1 X 8=8)

1. उपन्यास : आपका बंटी–मन्नू भंडारी
2. हिन्दी साहित्य के इतिहास की संक्षिप्त रूपरेखा

इकाई 1. : आपका बंटी : (I) कथावस्तु और प्रमुख चरित्र
(II) केन्द्रीय समस्या
(III) आधुनिक परिवार व्यवस्था में परिवर्तन
(IV) बाल मानोविज्ञान

इकाई 2. :हिंदी साहित्य : (I) काल विभाजन और नामकरण
(II) आदिकाल : प्रमुख प्रवृतियाँ
(III) भक्तिकाल : प्रमुख प्रवृतियाँ
(IV) रीतिकाल : प्रमुख प्रवृतियाँ

इकाई 3: गद्य विधाएं : (I) आधुनिकता और गद्य विधाओं का विकास
(II) आधुनिक हिंदी कविता –छायावाद, प्रगतिशील काव्यधारा
(III) उपन्यास
(IV) निबंध, नाटक और कहानी विधाओं का विकास